NEW ERA PUBLIC SCHOOL, PATNA

(Affiliated to CBSE, Delhi, Upto 10+2 level)

E-magazine published in Hindi & English, Year-1, April, 2026

NORTH STAR

E-MAGAZINE

APRIL 2026

School

aptitude

learning

values

SCHOOL PROGRAM AND EXTRACURRICULAR ACTIVITIES

FUN FACTS

EDITORIAL TEAM

स्वामित्व : © न्यू एरा पब्लिक स्कूल,पटना।

संरक्षक द्वैय : 1. डॉ. (श्रीमती) नीना कुमार
2. डॉ. अरविन्द कुमार

सलाहकार : मौसमश्री

संपादक : ओम नमः शिवाय सिंह

प्रबंध संपादक : अंकित अग्रवाल

कार्यकारी संपादक : राहुल कुमार सोनी

संपादन सहयोग : संजीव कुमार

आवरण सज्जा : दीपक कुमार

संकलन : शशांक मिश्रा

चित्रांकन साभार : गूगल

मुद्रक/ प्रकाशक : डॉ. (श्रीमती) नीना कुमार द्वारा लोहिया नगर , कंकरबाग , पटना-800020 से ऑनलाईन प्रकाशित एवं मुद्रित ।

वैधानिक चेतावनी :

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्रियों अथवा चित्रों के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होंगे संपादक , प्रकाशक एवं मुद्रक नहीं |

शुभकामना संदेश

DR. ARVIND KUMAR

यह जानकर अतिशय हर्षातिरेक की अनुभूति हुई कि केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, नई दिल्ली द्वारा संबद्ध न्यू एरा पब्लिक स्कूल, विक्रम, पटना 'शिक्षा' एवं 'मानव मूल्यों' पर आधारित अपनी मासिक ई-पत्रिका- 'नार्थ स्टार' का प्रकाशन कर रही है। वस्तुतः सृजनशीलता एवं अभिव्यक्ति को सहेजना तथा उसे जन-जन तक पहुँचाना एक प्रशंसनीय कार्य है। आशा है, यह अद्वितीय पहल न केवल साहित्य, कला, विज्ञान एवं शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगा बल्कि, वैश्विक जन-जीवन में प्रेम, शांति, समरसता संस्थापित करने के साथ-साथ सामुदायिक रूपांतरण का भी माध्यम बनेगा। एतदर्थ रचना, चयन, संयोजन एवं संपादन कला की मणिकांचनमय प्रौढ़ता; विद्यालय के समुज्ज्वल भविष्य तथा पत्रिका के सफल एवं लोकोपयोगी प्रकाशन हेतु हार्दिक मंगल कामनाएँ !

PRINCIPAL'S MESSAGE

DR. NEENA KUMAR

Dear Students, Teachers, and Parents,

It gives me immense pleasure to present this month's edition of our school magazine. This publication is not just a collection of articles, but a reflection of the creativity, talent, and dedication that define our school community. Education is not confined to textbooks alone; it is a continuous journey of learning, exploring, and growing. I am proud to see our students excelling not only in academics but also in co-curricular activities, sports, and various creative pursuits. Your enthusiasm and hard work truly inspire us all.I would like to appreciate the efforts of our teachers, who constantly guide and motivate students to reach their fullest potential. My sincere thanks also go to the editorial team for their commitment in bringing out this wonderful magazine.Let us continue to strive for excellence, uphold our values, and support each other in building a brighter future. Remember, every small step you take today shapes the success of tomorrow.Wishing you all continued success and happiness.

VICE PRINCIPAL'S MESSAGE

MR. MAUSAM SHRI

Dear Students, Teachers, and Parents,It gives me great pleasure to share a few words in this edition of our school magazine, which beautifully reflects the creativity and hard work of our students and the dedication of our teachers.School life is a precious phase that shapes young minds, nurtures values, and uncovers talents. I am proud to see our students excelling in academics, sports, and co-curricular activities, building both confidence and character along the way.I sincerely appreciate our teachers for their constant guidance and congratulate the editorial team for putting together such a vibrant magazine.May this magazine inspire each of you to dream big and reach greater heights.Wishing you all success and a bright future ahead.

विषय-अनुक्रमणिका

क्रम	विषय	पेज
1.	स्कूल टॉपर ऑफ़ 10th बोर्ड 2025-26	01
2.	सम्पादकीय	02-03
3.	बदलती शिक्षा प्रणाली : उत्तम विद्यार्थी	04
4.	जीवन में शिक्षक का महत्व: अदिति प्रिया	04
5.	विद्यार्थी जीवन: विकास कुमार सिंह	04
6.	मैं गंगा हूँ : शिवांगी शेखर	05
7.	हमें बचाओ : कृतिका	05
8.	अगर बोलने लगी किताबें : वृंदा सिन्हा	05
9.	प्रेरणा : पलक सागर	05
10.	हिंदी भाषा सबसे प्यारी : रितिका कुमारी	05
11.	Life in 2050 : Saumya Sinha	06
12.	A day without internet : Vishwajeet Kr.	06
13.	My Bihar : Shreya Sakshi	06
14.	School Life : Ansh Kr. Sharma	07
15.	Teacher : Harsh	07
16.	The Heart of New Era : Deepak Mishra	08
17.	Art Gallery	09
18.	मीडिया के नज़र में एन.ई.पी.एस.	10-11

संपादक मंडल

OM Namah Shivay Singh
EDITOR

Ankit Agarwal
EDITOR

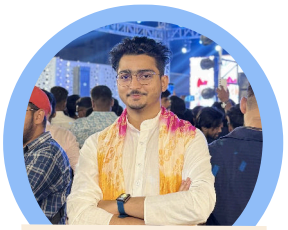

Rahul Kr. Soni
EDITOR

Sanjiv Kumar
EDITOR

Deepak Kumar
EDITOR

Shashank Mishra
EDITOR

NEW ERA PUBLIC SCHOOL, PATNA
(Affiliated to CBSE, Delhi, Upto 10+2 Level)
CBSE - X RESULT (SSE - 2026)
Legacy of Outstanding Results Continues...
Congratulations
School Topper
98%
AMAN RAJ
Roll No.- 22231530
VAIBHAV VIMAL ROLL NO.- 22231426 94.3% Class - 10 CBSE Congratulations To Our School Toppers
LAKSHMI RAJESHWAR SINGH ROLL NO.- 22231547 93% Class - 10 CBSE Congratulations To Our School Toppers
SHASWAT ANAND ROLL NO.- 22231563 92.8% Class - 10 CBSE Congratulations To Our School Toppers
ABDUL KABEER ROLL NO.- 22231526 92.6% Class - 10 CBSE Congratulations To Our School Toppers
UTTAM VIDYARTHI ROLL NO.- 22231569 92.6% Class - 10 CBSE Congratulations To Our School Toppers
SIMRAN KUMARI ROLL NO.- 22231585 92.6% Class - 10 CBSE Congratulations To Our School Toppers
ARNAV BARNWAL ROLL NO.- 22231536 91.4% Class - 10 CBSE Congratulations To Our School Toppers
ARNAV GAUTAM ROLL NO.- 22231537 91.4% Class - 10 CBSE Congratulations To Our School Toppers
Admin :- Block A-West of Malahi Pakri chowk, Lohia Nagar, Kankarbagh, Patna-20.
Block B - F/52, PC Colony, Kankarbagh, Patna 20.
School- Baghakol, P.O. Patut, P.S.- Bikram Dist. - Patna, 801112
newerapublicschool93@gmail.com www.newerapublicschoolpatna.org.
Contact No. - 0612-3563827 & 3559752 , 9472040129, 8757290267

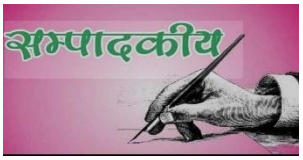

सम्पादकीय

असफलता से सीखें सफलता का गुर

"असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो तुम,
कहाँ कमी रह गई, देखो और सुधार करो तुम,
जब तक सफल न हो नींद-चैन को त्यागो तुम,
संघर्षों का मैदान छोड़कर मत भागो तुम।"

वस्तुतः सफलता एवं असफलता मानव जीवन के दो महत्वपूर्ण आयाम है। 'सफलता' जहाँ अपने अभीष्ट लक्ष्य व अभीप्सित वस्तु की प्राप्ति का नाम है, वहीं 'असफलता' वांछनीय या इच्छित लक्ष्य की प्राप्ति न होने की स्थिति। सफलता की राह सरल नहीं दुर्गम होती है परन्तु, यह जीवन को सार्थक एवं मूल्यवान बनाती है; के बावजूद यह निर्विवाद सत्य है कि असफलता निराशा, निर्बलता एवं हताशा का सूत्र कभी नहीं, यह तो एक नई प्रेरणा है क्योंकि असफलता एवं गलतियाँ केवल यही प्रमाणित करती है कि सफलता के लिए प्रयास पूरी तन्मयता व समर्पण के साथ नहीं किया गया।

असफलता प्रायः किसी भी उद्यम में आ सकती है परन्तु, यह कभी अनंतिम नहीं होता। दूसरी बात कि सफलता अभ्यासों की समष्टि का द्योतक होता है जिसका कोई शॉर्टकर्ट रास्ता नहीं। तृतीय महत्वपूर्ण तथ्य कि असफलता हमें ज्ञान, अनुभव एवं सही-गलत की नसीहत देती है। यह हमें मांजती है तथा अपने द्वारा कृत गलतियों को सुधारने का अवसर प्रदान करती है जिसके परिणामस्वरूप हम अपने कार्य करने के पुराने ढर्रे, तौर-तरीकों एवं रणनीतियों में बदलाव लाते हैं तथा पुनः प्रबल अध्यवसाय व अपरिमित ऊर्जा के साथ अपने ध्येय प्राप्ति की ओर अग्रसर होते हैं। इस संदर्भ में डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने लिखा है कि- *'असफलता की कहानियाँ पढ़ें उनसे आपको सफलता पाने की बेशक़ीमती विचार मिलेंगें।'*

निःसंशय प्रत्येक असफल प्रयास सफलता का नया संदेश, दृष्टिकोण एवं अवसर देता है। अतएव, हमें अपनी असफलता से कतई निरूत्साहित नहीं होना चाहिए, न ही अपनी असफलताओं का ठीकरा दूसरों पर फोड़ना चाहिए और न ही किसी भी स्थिति - परिस्थिति में पराजय स्वीकार करना चाहिए बल्कि, उसकी गहन समीक्षा कर असफलता के मूलभूत कारणों की खोज करनी चाहिए तथा दोषों के निराकरण हेतु एक बार पुनः भगीरथ प्रयास करना चाहिए।

वाकई में जब हम असफल होते हैं तो हम उन गलतियों एवं अनुभवों से सीखते हैं तथा उसकी पुनरावृति करने से बचते हैं साथ ही हम और ज्यादा मनोयोग एवं दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ कार्य करते हैं क्योंकि इच्छाशक्ति जितनी दृढ़ एवं बलबती होगी संकल्प उतना ही मजबूत होगा। ऐसे ही प्रसंग में साहित्यकार फ्रेंक काफ़्का ने लिखा है कि-

'अच्छा साहित्य लिखने के लिए क्या चाहिए? एक कलम, एक मेज़ व ढेर सारे रद्दी कागज, ताकि आप बार-बार लिखें, उनको काटकर फिर लिखें।'

अस्तु, असफलता सफलता की जननी है, क्योंकि यह हमारी कमियों को उजागर करती है जिससे हम सबक प्राप्त कर कुछ नया सीखते हैं। यह हमें प्रेरणा तथा मार्गदर्शन प्रदान करती है। अतः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि सफलता उन्हीं का कदम चुमती है जो अपनी छोटी-मोटी समस्याओं एवं असफलताओं से सीख प्राप्त कर अपनी गलतियों को सुधारते हैं व निष्ठापूर्वक ऊर्जा गंवाये बिना पुनः सफलता के लिए प्रयास करते हैं, क्योंकि सफलता प्रायः तभी मिलती है जब हम असफलता एवं निराशा जैसे प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने अंतःस्थित अमोध शक्ति का विवेकपूर्ण तरीके से उपयोग करने का प्रयास करते हैं। मंतव्यतः-

'अनिर्वेदो हि सततं सर्वार्थेषु प्रवर्तकः। करोति सफलं जन्तोः कर्मयच्च करोति सः।।'

अर्थात् निराशा से मुक्ति बहुत खुशी देती है और सफलता की ओर ले जाती है। मनुष्य का साहसी अभियान निश्चित रूप से फल देता है। इस प्रकार, स्पष्ट है कि चुनौती व संघर्ष जितना ज्यादा होगा सफलता उतनी ही शानदार होगी क्योंकि असफलता हमें बड़ी जिम्मेदारियों एवं पुनः - पुनः अभ्यास की समष्टि का बोध कराती है। तत्वतः जीवन में कभी-कभी असफलता मिलना भी जरूरी है क्योंकि यह हमें अपनी प्रतिभा का परचम लहराने तथा अपना ज़ौहर दिखाने के लिए और अधिक श्रम- सीकर प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करती है तभी तो बहुधा कहा जाता है कि - *Failure is the first step towards success.* कहने का अभिप्राय यह है कि असफलता सफलता तक पहुँचने का प्रथम कदम है। यह सफलता की सीढ़ी का पायदान तथा आधार स्तम्भ है, जो नित नये सफलता का मार्ग प्रशस्त करती है। इस संदर्भ में चंद निम्न पंक्ति बिल्कुल मौजूँ है- *'Develop success from failure discouragement and failure are two of the sure stepping stones to success.'*

अर्थात् असफलता से सफलता का सृजन कीजिए, निराशा और असफलता सफलता के दो आधार स्तम्भ है। अमूमन, असफलता मात्र एक चुनौती है जिसका समाधान दृढ़ इच्छाशक्ति, कठिन परिश्रम एवं निर्भ्रांत ज्ञान, गुण, कला, कौशल व अभिवृति से किया जाता है। भारवि ने तो स्पष्ट लिखा है कि- *"असफलताओं से न घबराकर लगातार प्रयत्न करने वाले लोगों की गोद में सफलता खुद आकर बैठ जाती है।"* स्वामी विवेकानन्द ने भी कहा है कि- *"असफलता कभी-कभी सफलता का आधार होती है। यदि हम अनेक बार भी असफल होते हैं तो कोई बात नहीं, प्रयत्न करके असफल हो जाने की अपेक्षा प्रयत्न न करना अधिक अपमानजनक है।"*

यद्यपि इसमें कतई संशय नहीं कि सफलता एवं असफलता का अन्तर्द्वद्व कर्त्ता के मन-मस्तिष्क को मथता है तथा असफलता की स्थिति में अपने को संतप्त महसूस करता है तथापि किसी भी स्थिति में हमें असफलता का अनुताप नहीं करना चाहिए। असफलता के पश्चात् हमें आत्म-साक्षात्कार करना चाहिए तथा अपनी कमजोरियों एवं

समस्याओं के मूल जड़ तक जाना चाहिए तथा अपने संकल्प को पूरा करने के लिए निराशा, भय एवं संत्रास के वातावरण से ऊपर उठकर अपने अन्दर छुपे सफलता के बीज-शक्ति को ओजस में रूपांतरित करना चाहिए क्योंकि प्रतिभा, योग्यता एवं सफलता के बीज बहुधा प्रत्येक मानव के अन्तःकरण में गुह्य रूप में विद्यमान होते हैं, उसे तो बस माकूल परिस्थितियों की दरकार होती है। अर्थात् कमजोरी का ईलाज अपने कमजोरी पर रोते रहना नहीं बल्कि उसका यथोचित् सामना करना है। अस्तु, साधना-सिन्धु में अपरिमित ज्ञान का आश्रय लेकर प्रयत्नशील रहना होगा तथा आत्म-मूल्यांकन में स्वयं को उत्कृष्ट आंकना होगा क्योंकि यही सफलता का बीज मंत्र है। दूसरी बात कि गलतियाँ होती ही इसलिए है कि हम कार्य को सही तरीके से कर सकें। श्रीलंकाई क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान अर्जुन रणातुंगा की निम्न पंक्ति बिल्कुल प्रासंगिक है- *"हारना जीत की किताब का पहला अध्याय है, दूसरा अध्याय हार से मिली सीख पर अमल करना तथा तीसरा व अंतिम अध्याय में जीत आपके नाम से मिलेगी।"*

जी हाँ! सीखना हमेशा मुमकिन है तथा सीखने वाला कभी असफल नहीं होता क्योंकि सफलता सीख, संघर्ष एवं पुरूषार्थ के साकारात्मक त्रिकोण का गुणनफल है। अतएव, हमें स्वामी विवेकानन्द का निम्न सूत्र वाक्य हमेशा स्मरण रखना चाहिए कि- *'यदि हजार बार भी असफल हो जाओ, तो एक बार फिर प्रयत्न करो।'*

और यही कारण है कि ***अब्राहम लिंकन*** लगभग तीन दशक तक अपने प्रयासों में असफल रहने के बाद भी असफलता को स्वीकार नहीं किया और अपने अथक परिश्रम के बल - बूते 1861 ई० में अमेरिका के राष्ट्रपति बने। इसी प्रकार, ***थॉमस अल्वा एडिसन*** एक हजार बार असफल होने के बाद इलेक्ट्रिक बल्ब अर्थात् प्रकाश के नवाचार का आविष्कार करने में सफल हुए। ***अल्बर्ट आइन्स्टाईन*** 07 वर्ष की आयु तक निरक्षर थे किन्तु, दुनियाँ का सबसे बड़ा वैज्ञानिक बने। ***मुहम्मद ग़ज़नवी*** 17 बार भारत पर आक्रमण किया जिसमें वह 16 बार लगातार असफल रहा और अंत में 17वीं बार अपनी विजय पताका लहरायी। इसके अतिरिक्त, ***एडमंड हिलेरी, विंस्टन चर्चिल, मोहम्मद गौरी*** सरीखे और न जाने कितने ऐसे लोग हुए जिन्होंने बार-बार असफलताओं का सामना करने के बावजूद अपना मूल्य समझा और आत्मविश्वास, धैर्य एवं सकारात्मक दृष्टिकोण बनाये रखा व अपना दुर्जेय लक्ष्य प्राप्त किया।

इस प्रकार, दृढ़ इच्छा शक्ति एवं प्रसुत कर्म सफलता की बुनियाद है क्योंकि सफलता प्राप्त करने के लिए कर्म में निरत रहना परमावश्यक है क्योंकि इसके कारण ही मन: इच्छा-शक्ति बलबती होती है, इरादा मजबूत होता है और हम सफलता प्राप्त करते हैं। अतः जो मनुष्य कर्मण्य है, क्रियाशील है, कर्म में आनन्द का अनुभव करता है, अपनी गलतियों से सीखता है वह कभी भी अपने भाग्य को नहीं कोसता और न ही उनके पास शिकवा-शिकायतों का बाहुल्य होता है। इससे इतर, निरी कायरता हमें भ्रमित करती है तथा भ्रमित अवस्था में किया गया कोई भी कार्य मनोवांछित सफलता का द्वार नहीं खोलता। अर्थात् कर्त्तव्य और कर्म की बड़ी महिमा होती है। फलतः सफलता प्राप्ति हेतु हमें 'कोशिश' नहीं 'कर्म' करना चाहिए क्योंकि कर्म प्रधान है, पूजा है, जीवन है, साधना है, उपासना है तथा सफलता की कुंजी है। कहा भी गया है कि- *'सद्कर्म ही है हमारी जीवन-ज्योति जो जीवन को शक्ति देता है और शक्ति व्यक्ति में पुरूषार्थ और स्वाभिमान पैदा करती है।'*

अतएव, हमें सदैव आगे देखना चाहिए और भविष्य में वह सब कर दिखाने की उत्कट अभिलाषा रखनी चाहिए जो हम अतीत में नहीं कर सके। हॉलाकि जीवन में असफलताएँ, निराशा एवं कष्ट आदि आते ही रहते हैं किन्तु, इसके समक्ष हमें कभी अपनी घुटना नहीं टेकनी चाहिए क्योंकि यह शाश्वत सत्य है कि दुर्बलताएँ कतई अपराजेय नहीं होती यदि परिश्रम धैर्य और लगनपूर्वक निरन्तर किया जाय। इस प्रकार, हम अपनी स्थिति-परिस्थिति, हार-जीत, जय-पराजय तथा सफलता-असफलता के लिए स्वयं जिम्मेदार हैं तथा अपने प्रारब्ध के स्रष्टा भी स्वयं ही है।

फलतः स्पष्ट है कि मानव की सबसे बड़ी हार उसका स्वयं से हार जाना है, किन्तु जीवन योद्धा कभी हार नहीं मानते। अस्तु, हमें भी एकलव्य जैसा कठिन प्रयास करना चाहिए। द्रष्टव्यतः- *"प्रयत्न करते रहो, जब तुम्हें अपने चारों ओर अंधकार ही अंधकार दिखता हो, तब भी मैं कहता हूँ प्रयत्न करते रहो। किसी भी परिस्थिति में तुम हारो मत, बस प्रयत्न करते रहो। तुम्हें तुम्हारा लक्ष्य जरूर मिलेगा इसमें जरा भी संदेह नहीं।"*

उदाहरणार्थ, तैरने का अभ्यास करने वाला व्यक्ति प्रारंभिक अवस्था में भयभीत और विफल होता है, परंतु यदि वह प्रारंभिक भय या विफलता के कारण तैरना छोड़ दे तो वह तैरना कभी नहीं सीख पायेगा। लूडो, साँप -सीढ़ी का खेल, बच्चों का चलना सीखना, चिड़ियों का उड़ान भरना सीखना आदि कई ऐसे उदाहरण हैं, जो यह प्रमाणित करता है कि हमारी छोटी-से-छोटी भूल हमें कोई न कोई शिक्षा देती है जिससे अनुप्राणित होकर हम जीवन में सफलता व मुकाम प्राप्त करते हैं।

मूलार्थतः *नकारात्मक सोंच, दृढ़ विश्वास की कमी, खंडित विचार, कोरा दिवास्वप्न, अहंकार, हीन भावना, प्राथमिकता तय न करना, सतत् एवं सचेतन प्रयास का अभाव, अवसर को न पहचानना, विद्वेषपूर्ण प्रतिस्पर्धा, निर्णय लेने की दुर्दमनीय इच्छा-शक्ति का अभाव, शॉर्टकर्ट की तलाश, भाग्यवादी दृष्टिकोण जहाँ असफलता के मूलभूत कारक है* वहीं दूसरी ओर, -

आत्मविश्वास, दृढ़ इच्छा-शक्ति, एकाग्रता, कर्मण्यता, तन्मयता, उत्साह, साहस, सजगता, लगन, धैर्य, श्रद्धा, कठोर परिश्रम, बारंबार प्रयास, निरन्तर अध्ययन, प्रतिबद्धता, कुशल समय प्रबंधन, प्रेरणा, निर्दिष्ट लक्ष्य के प्रति समर्पण, सामंजस्य, दूरदृष्टि, स्पष्ट दृष्टिकोण, सुस्पष्ट कार्य - रेखा, योजनाबद्ध तैयारी, आत्म-साक्षात्कार, अनुशासन, आत्मसम्मान, कार्यातुरता, इन्द्रिय - निग्रह, सकारात्मक सोंच, विवेकपूर्ण निर्णय लेने का सामर्थ्य, श्रेष्ठ साधन का उपयोग, सीखने का जुनून तथा असफलताओं की समीक्षा एवं विशेषज्ञों का परामर्श आदि सफलता का बीज तत्व है।

आपकी चतुर्दिक सफलता एवं स्वर्णिम भविष्य की हार्दिक शुभकामनाओं सहित -

संपादक,

ओम नमः शिवाय सिंह

इत्यलम्

बदलती शिक्षा प्रणाली

- उत्तम विद्यार्थी वर्ग : XI (विज्ञान संकाय)

शिक्षा एक ऐसा मंच है जो मनुष्य को जानवरों से अलग करता है। शिक्षा ग्रहण करने से मनुष्य को ज्ञान और कौशल की प्राप्ति होती है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक भारतीय शिक्षा-प्रणाली ने भारत वासियों को अन्य के बीच लोकप्रिय बना दिया है। प्राचीन और मध्यकालीन समय में छात्रों को ऐसे शिक्षा दी जाती थी कि उस युग में वे जीवित रह सके। वर्तमान समय में अन्य पहलुओं पर भी ध्यान दिया गया। यह लेख भारतीय शिक्षा-प्रणाली में आए बदलाव एवं वर्तमान शिक्षा-प्रणाली पर प्रकाश डालने का काम करेगा।

भारत में सभ्यताओं का इतिहास 2500 ई. पूर्व से भी पुराना है। सिंधु घाटी सभ्यता (3000-1500) की खोज़ के बाद यह पता चला कि उसके निवासी साहित्य, कला और संगीत में प्रवीण थे, हालांकि उनके भाषागत लिपि ज्ञात नहीं है। पुरातत्व विभाग के अनुसार, वहां कई ऐसे मकान के ढांचे पाए गए हैं जहां शिक्षा दी जाती थी। आर्यों के आगमन के बाद अर्थात् वैदिक काल (1500-500) ई. पूर्व में भी शिक्षा का प्रसार था। शिक्षा गुरुकुल में दी जाती थी और केवल उच्च वर्णों के लोग ही शिक्षा ग्रहण करते थे। उस समय आध्यात्मिक शिक्षा भी दी जाती थी जिसमें शरीर के आंतरिक भागों के बारे में भी ज्ञान दिया जाता था। शिक्षा संस्कृत भाषा में दी जाती थी। बालकों को अपने माता-पिता से अलग रहकर गुरु के घर शिक्षा दी जाती थी और गुरुओं को गुरु दक्षिणा दी जाती थी। 563 ई. पूर्व में गौतम बुद्ध के जन्म के बाद भारत में वैदिक शिक्षा-प्रणाली के बाद बौद्ध शिक्षा प्रणाली का भी उदय हुआ। यह पाली भाषा में दी जाती थी। आम लोगों की भाषा में होने के कारण अनेकानेक शूद्र बौद्ध धर्म में परिवर्तित हुए और ज्ञान अर्जित किए। बौद्ध शिक्षा-प्रणाली में महिलाओं को भी शिक्षा का अधिकार था। बौद्ध शिक्षा ग्रहण करने के लिए नालंदा और तक्षशिला काफी विख्यात थे। देश और अन्य देशों से कई लोग यहां शिक्षा ग्रहण करने आते थे जहां ललित कला, गणित, चिकित्सा और खगोल जैसे कई विषय पढ़ाए जाते थे। जैसे-जैसे नए साम्राज्य का उदय हुआ वैसे-वैसे शिक्षा प्रणालियों में भी बदलाव आते गए। सबसे बड़ा और प्रभावशाली बदलाव तब आया जब मोहम्मद गोरी के मर जाने के बाद कुतुबुद्दीन ऐबक ने भामलुक वंश की स्थापना की। इससे भारत में नई शिक्षा-प्रणाली का जन्म हुआ। अरबों और तुर्कों ने भारत में कुछ नई संस्कृतियां,परंपराएं और संस्थान लाए, जिसमें सबसे उल्लेखनीय बदलाव शिक्षा की इस्लामी रूपरेखा थी जो वैदिक और बौद्ध प्रणाली से भिन्न था। मध्यकाल में दो प्रकार की शिक्षाएं थी: धर्मनिरपेक्ष और धार्मिक।आध्यात्मिक शिक्षा प्रणाली जहां कुरान, इस्लामी कानून और इस्लामी इतिहास पर जोर देती थी वहीं धर्मनिरपेक्ष शिक्षा-प्रणाली में अरबी साहित्य, व्याकरण, इतिहास, दर्शन, गणित, भूगोल, राजनीति, अर्थशास्त्र, यूनानी भाषा और कृषि का अध्ययन शामिल था। उच्च पद प्राप्त करने के लिए फारसी का ज्ञान अनिवार्य था। हालांकि स्थानीय स्तर पर गुरुकुल का प्रचलन अभी भी था। मध्यकालीन भारत में दिल्ली, आगरा, जौनपुर, बीदर जैसे स्थान शिक्षण के केंद्र थे। मुगल शासन के दौरान 1608 में विलियम हॉकिंस भारत आया और धीरे-धीरे 1613 में उन्होंने अपने पहले कारखाने को स्थापित किया। अंग्रेजो ने अपनी ताकत व चालाकी के बलबूते 1857 तक लगभग सारे साम्राज्यों का अंत कर दिया और इसके बाद ब्रिटिश सरकार ने भारत का शासन अपने हाथों में ले लिया।

ब्रिटिश भारत को असभ्य समझते थे। उनका मानना था कि भारत में शिक्षा का स्तर काफी निम्न है ।हालांकि कुछ प्राच्यवादी इसका विरोध करते थे जैसे- विलियम जॉन्स और हेनरी थॉमस कोलब्रुक। 1830 के दशक तक प्राच्यवादियों का विरोध काफी तेजी से हो रहा था। थॉमस बैबिंगटन मैकाले इनमें से सबसे प्रमुख आलोचक थे। उनका मानना था कि अंग्रेजी के ज्ञान से भारतीयों को दुनियां के श्रेष्ठतम साहित्यिक कृतियों को पढ़ने का मौका मिलेगा।

इस प्रकार, अंग्रेजी पढ़ने से लोग सभ्य बनेंगे।1854 में ईस्ट इंडिया कंपनी के नियंत्रक मंडल के अध्यक्ष चार्ल्स वुड ने एक नीति पत्र जारी किया और भारतीय के लिए नई शिक्षा-प्रणाली बनाया जिसके तहत् यूरोप के ज्ञान, कलाओं, सेवाओं, दर्शन और साहित्य को पढ़ाया जाता है। तत्कालीन समय से कक्षा निर्धारित किए जाने लगे, बेंच और डेस्क की व्यवस्था की गई, वार्षिक और अर्द्धवार्षिक परीक्षाएं होने लगी। अब व्यवहारिक ज्ञान से ज्यादा सैद्धांतिक ज्ञान पर जोड़ दिया जाने लगा। बहुत से भारतवासी इसके विरोध में थे, कुछ समर्थन कर रहे थे वहीं कुछ का मानना था कि पश्चिमी शिक्षा-प्रणाली से कुछ अच्छे तत्व और पूर्व के शिक्षा-प्रणाली से तत्वों को मिश्रित कर एक नई शिक्षा-प्रणाली विकसित की जाए।
भारत में राष्ट्रवाद फैलने के बाद कई लोगों ने भारत को स्वतंत्र बनाने के आंदोलन में अपनी भूमिका निभाई। आज़ादी के बाद भारत में विज्ञान को बढ़ावा दिया गया। कई राष्ट्रीय शिक्षा नीतियाँ लाई गई। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना की गई। नए-नए विषयों को चिह्नित किया गया। इस प्रकार, शिक्षा-प्रणाली में बदलाव निरंतर आ रहे हैं और इसका उद्देश्य भारतीय छात्र-छात्राओं में व्यावहारिक, सैद्धांतिक और भाषागत ज्ञान का प्रसार करना है।

• • •

जीवन में शिक्षक का महत्व

- अदिति प्रिया वर्ग: XI

शिक्षक विद्यार्थियों की सृजनात्मकता और कल्पनाशीलता को पहचान कर उसे निखारने का कार्य करते हैं। वे छात्रों को नया दृष्टिकोण एवं समस्याओं का समाधान खोजने की प्रेरणा देते हैं। शिक्षक बच्चों की भावनाओं को समझते हैं और उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने में मदद करते हैं।शिक्षक बच्चों को अपनी कठिनाइयों से निपटने हेतु मानसिक शक्ति प्रदान करते हैं साथ ही अपने ज्ञान और उत्साह से यह दिखाते हैं कि सीखने की प्रक्रिया जीवन भर चलती रहती है। वे केवल छात्रों को आजीवन सीखने के लिए ही प्रेरित नहीं करते हैं बल्कि, हर बच्चे की अद्वितीय प्रतिभा को पहचानते हैं और उसे उभारने में मदद करते हैं।अस्तु, वह बच्चों की विशेषताओं को निखार कर उन्हें अपनी क्षमता का एहसास कराते हैं। शिक्षक बच्चों के भीतर सकारात्मक दृष्टिकोण और आत्मनिर्भरता का गुण विकसित करते हैं। वे सिखाते हैं कि कैसे असफलताओं से भी सीख अर्जित कर आगे बढ़ा जा सकता है।

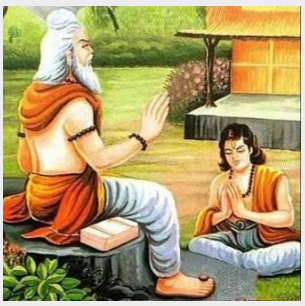

शिक्षक बच्चों को विभिन्न संस्कृतियों, विचारधाराओं एवं परंपराओं का आदर करना सिखाते हैं। शिक्षक बच्चों की जिज्ञासा को बढ़ाकर उन्हें नई चीजों के बारे में जानने और समझने का अवसर प्रदान करते हैं। यह गुण उनके पूरे जीवन के लिए मूल्यवान होता है। शिक्षक बच्चों को नैतिकता, समाज सेवा और अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनाते हैं। वह बच्चों को एक जिम्मेदार नागरिक बनाते हैं।
आज के डिजिटल युग में शिक्षक छात्रों को तकनीक का सही उपयोग करना सिखाते हैं और उन्हें तकनीकी रूप से सक्षम बनाते हैं। शिक्षक केवल शिक्षा प्रदान करने वाले नहीं है, बल्कि यह समाज और व्यक्ति के संपूर्ण विकास का मुख्य आधार स्तंभ भी हैं। शिक्षक के बिना एक सशक्त और जागरूक समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है। तभी तो कहा गया है कि-

"गुरु, गोविंद दोऊ खड़े काके लागू पॉय।
बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताए।।"

विद्यार्थी जीवन

- विकास कुमार सिंह, वर्ग: XII (PCB)

विद्यार्थी जीवन फूलों का सेज नहीं, यह कांटों का ताज है जिसे अधिक अध्ययन और परिश्रम से सरल बनाया जा सकता है। जब तक विद्यार्थी अध्ययन कार्य में संलग्न रहता है तब तक छात्र जीवन कहलाता है। इसका प्रारंभ प्रायः पाठशाला से होता है, क्योंकि यहीं से प्रारंभ होता है उसका प्रशिक्षण काल। यह समय इसलिए कांटों का ताज होता है, क्योंकि इस समय में अत्यधिक नियम व अनुशासन का पालन करना होता है। सचमुच में कोई आदमी अपने जीवन में क्या करेगा यह उसके विद्यार्थी जीवन पर निर्भर करता है। किसी ने विद्यार्थी जीवन के गुणों की चर्चा करते हुए ठीक ही कहा है कि-

"काक चेष्टा, बको ध्यानं, स्वान निद्रा तथैव च।
अल्पहारी, गृहत्यागी, विद्यार्थी पंच लक्षणं।।"

वास्तव में उस छात्र का जीवन संवर जाता है जिसमें उक्त पांच लक्षण विद्यमान होते हैं। अस्तु, वह व्यक्ति न केवल महान बन जाता है, बल्कि प्रेरणा का पात्र भी बन जाता है और जो विद्यार्थी अपने जीवन काल में इन लक्षणों को नहीं अपनाते हैं उनका जीवन कष्टमय हो जाता है। वह परिवार, समाज एवं देश के लिए कलंक बन जाते हैं। विद्यार्थी जीवनकाल स्वल्प होती है, जिसमें सुनहरे भविष्य के लिए सभी वांछित गुणों का विकास करना होता है। इस जीवन में नियम, अनुशासन के साथ-साथ दृढ़ संकल्प की भी आवश्यकता होती है। इसलिए कहा गया है कि विद्यार्थी जीवन स्वर्णिम होता है। इस बहुमूल्य समय को कभी व्यर्थ में गंवाना नहीं करना चाहिए बल्कि, इसका सही उपयोग करना चाहिए।

• • •

आलेख/कविता

मैं गंगा हूँ

- शिवांगी शेख़र वर्ग : XII (वाणिज्य संकाय)

मैं गंगा हूँ। पुराणों के अनुसार, पहले मैं स्वर्ग में निवास करती थी। बाद में राजा सगर, भगीरथ आदि के अथक प्रयास से मेरा अवतरण धरती पर हुआ। भगवान विष्णु के चरणों से बहती हुई मैं भगवान शिव के जटाओं से निकली।

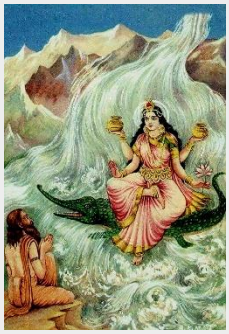

मेरा उद्गम गंगोत्री से व उत्तराखंड से माना जाता है। वहाँ से कलकल करती हुई मैं प्रयाग के संगम में मिलती हूँ। इस पावन स्थल के बाद मैं 'गंगा' नाम से प्रचलित हूँ। यमुना, रामगंगा, सरयू, गंडक, कोसी महानंदा और सोन आदि मेरी सहायक नदियां है। फिर बलखाती हुई मैं सरयू नाम से अयोध्या में मिलती हूँ। विभिन्न स्थलों में मैं विभिन्न नामों से जानी जाती हूँ। वाराणसी,पटना, झारखंड, पश्चिम बंगाल आदि से होते हुए बंगाल की खाड़ी में गंगासागर में समा जाती हूँ।

मुझमें लाखों आस्थावान लोग डुबकी लगाते हैं और पाप मुक्त होते हैं। मुझे जीवनदायिनी, मुक्तिप्रदायिनी और पापनाशिनी माना गया है, लेकिन आजकल लोग मेरी अविरलता और पवित्रता को हानि पहुँचा रहे हैं। इससे मुझे बहुत कष्ट होता है। लोगों के पाप धोते-धोते मैं स्वयं मैली होती जा रही हूँ। अब मैं किसी भागीरथ की प्रतीक्षा में हूँ जो मेरी अविरलता और निर्मलता को निर्बाध्य रूप से ज़ारी रखें।

हमें बचाओ

- कृतिका कुमारी, वर्ग : X

मैं गौरैया हूँ। मैं भारत के हर मुल्क में रहती हूँ। और पेड़ों की जगह मनुष्य के घरों में अपना घोंसला बनाती हूँ। मेरी आवाज़ चू-चू करके है। हमें बचाओ! हम विलुप्त हो रहे हैं। हमारी जनसंख्या दिन-प्रतिदिन घटते जा रही है और इसका मुख्य कारण मनुष्य का अत्यधिक स्वार्थी होना है। मनुष्य अपने मतलब के लिए हमें अपने घरों से भगा देते हैं और हम भूख प्यास से मर जाते हैं। मोबाईल टावर के रेडिएशन से भी हमारा अंत निकट आ रहा है। आप सब से प्रार्थना है कि इस रेडिएशन को कम करें और हमें भी जीने दें।

हिंदी भाषा सबसे प्यारी

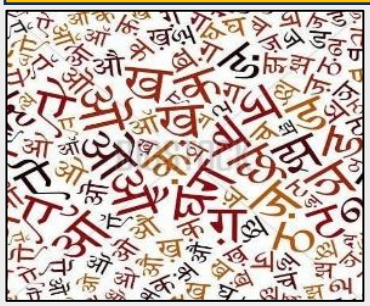

- रितिका कुमारी वर्ग: VIII

कोई पूछे यह कैसी है?
माँ की बिंदी जैसी है।

हिन्दी से हमारी पहचान है,
हिन्दी भाषा बड़ी महान है!

अपना देश महान है,
हिन्दी से हिंदुस्तान है।

हिन्दी जन की आशा है,
भारत की यह भाषा है।

देखो, समझो, बात हमारी;
हिन्दी भाषा है सबसे प्यारी।

प्रेरणा

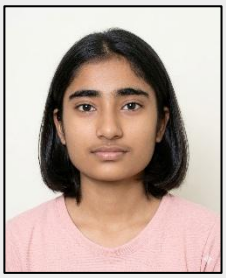

- पलक सागर वर्ग - XII (वाणिज्य संकाय)

खूबसूरत काया नहीं चित्तवन बनाओ,
सद्गुणों को जीने का आधार बनाओ।

स्वयं के सूरत पर जो इतना इठलाओगे,
क्या कभी तुम खूबसूरत बन पाओगे?

बैशाली की सुंदर नगरवधू थी आम्रपाली,
जिसका पूर्ण वय था चरम संताप वाली।

स्वयं माया के जाल में वो क्यों फंस गई,
ख़ुदा का शुक्र! समय रहते वो निकल गई।

जब राजनर्तकी से वो भिक्षुणी बन गई,
उसकी आंतरिक चक्षु है मानो खुल गई।

बौद्ध धर्म को जब से उसने अपनाया,
तब से जीवन में एक नई दृष्टि पाया।

सुनो री बहना ! तुम पाक गीता बनो,
सीता - सावित्री व प्रेरणा की गाथा बनो!

अगर बोलने लगी किताबें

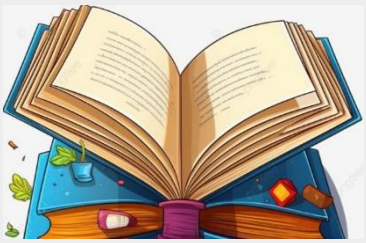

- वृंदा सिन्हा वर्ग: X 'A'

अगर बोलने लगी किताबें फिर हमसे वो पूछेगी,
क्या-क्या तुमने सिखा मुझसे बार - बार वो टोकेगी।

कितने राज बताएगी निज ख़ामोशी के पन्नों से
भले- बुरे में फ़र्क करेगी ख़ामोशी के पन्नों से,
कभी वीरों की गाथा सुनेंगे ख़ामोशी के पन्नों से,
कभी प्रेम की राग सुनेंगे ख़ामोशी के पन्नों से।

अगर बोलने लगी किताबें फिर हमसे वो पूछेगी,
क्या-क्या तुमने सिखा मुझसे बार - बार वो टोकेगी।

कभी कला कभी विज्ञान वाणिज्य की भाषा बोलेगी,
कभी शरारत कभी शराफ़त की बातें वो बोलेगी,
कभी सभ्यता कभी संस्कृति से मेरा नाता जोड़ेगी,
पढ़लो-पढ़लो बोल-बोल कर सर मेरा वो नोचेंगी।

अगर बोलने लगी किताबें फिर हमसे वो पूछेगी,
क्या-क्या तुमने सिखा मुझे बार - बार वो टोकेगी।

कभी विरासत की बातें वो सविस्तार बताएगी,
कभी सद्गुण का बोध कराकर अमृत पान कराएगी,
कभी अभीष्ट मार्ग पर निर्भय चलना हमें सिखाएगी,
कभी मौजूदा आलम में बर्बस जीना हमें सिखाएगी।

अगर बोलने लगी किताबें फिर हमसे वो पूछेगी,
क्या-क्या तुमने सिखा मुझे बार-बार वो टोकेगी!

Life in 2050

Meena wakes up when her smart window clears. No alarm needed. Her house reads her mood, then shows her "sunrise list" - 3 small things worth doing today. Today's list: water the balcony plants, call Dadi, try the new street dosa in Akbarpur. Outside, 2050 looks calmer. No petrol, no noise, solar trams and rental e-bikes run through clean lanes. Schools are "flex schools" - kids learn with robotic teachers at home and meet for group projects. At 47°C afternoon, the whole city pauses. The building shares one smart cooling system, and everyone takes a siesta (nap). Meena's job is new too. She's a "memory gardener".

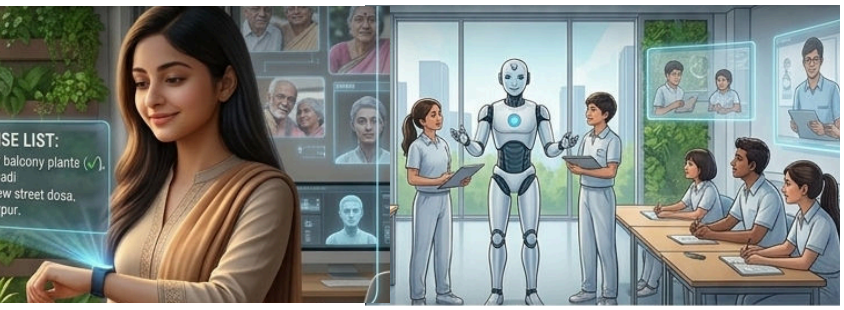

She takes old photos, voice notes, and videos of grandparents and turns them into AI stories that families can talk to. This morning she rebuilt a great-grandfather who cracks a joke in Bhojpuri. Nights are the best part without any pollution. Stars return and produce the lights which look absolutely beautiful. Meena's Sunrise list pings: You did all three. Add one? She types: Watch sky for 10 minutes.

She lies on the terrace. The mango tree, she watered, throws a small shadow on Mars. 2050 isn't about flying cars. It's about making small things kept and developed.

SAUMYA SINHA
CLASS : 9 "A"

A day without Internet

A day without the Internet would greatly affect our daily life. People would not be able to use social media, send emails, or attend online classes. Work and communication would become slow and difficult. However, it could also be a positive experience. People might spend more time with family, read books, and enjoy outdoor activities. It would reduce stress and distractions. In conclusion, while life without the Internet would be inconvenient, it could remind us to balance technology with real life.

VISHWAJEET KUMAR
CLASS : 9 "B"

My Bihar

Today, we are talking about our beautiful state, 'Bihar'. As we know that Bihar's name comes from the Sanskrit and Pali word 'Vihara', which means a dwelling place. It is situated in northern part of India with eleventh position in India (area wise). We know that Bihar has a rich cultural heritage and was an important centre for the growth of Buddhism, Jainism and Hinduism. The capital of Bihar is 'Patna'. Agriculture is the main occupation of Bihar because of the favourable climate condition and the fertility of soil. The famous festival of Bihar is 'Chhath Puja' which is celebrated along the banks of river by performing all the rituals. Popular cuisine like 'Litti Chokha', 'Sattu Paratha' and 'Khaja' are really enjoyed by the people of Bihar. Hindi, Bhojpuri, Maithili, etc are the main languages in Bihar. There are many famous personalities whose birthplace is Bihar like Dr. Rajendra Prasad, Veer Kunwar Singh, etc. There are also many tourist places in Bihar like Nalanda, Rajgir, Bodh Gaya, etc.

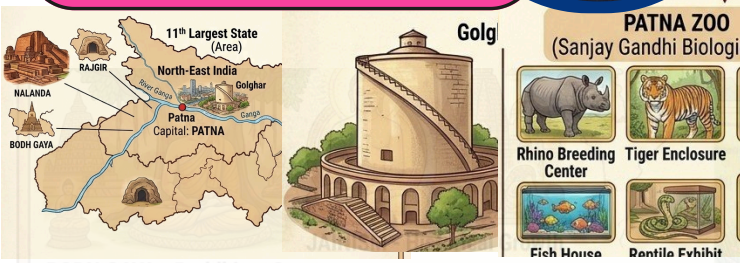

SHREYA SAKSHI
CLASS : 10 "C"

SCHOOL Life

A WONDERFUL TIME

School life is a wonderful time. We learn new things, make new friends and have fun. In school, we learn many subjects like English, Hindi, Maths, Science and Social Studies. Our teachers teach us these subjects and help us to understand them. We make many new friends in school. We play with them, share our lunch and have fun together. We also participate in many extra-curricular activities like sports, music and dance. School life is very important.

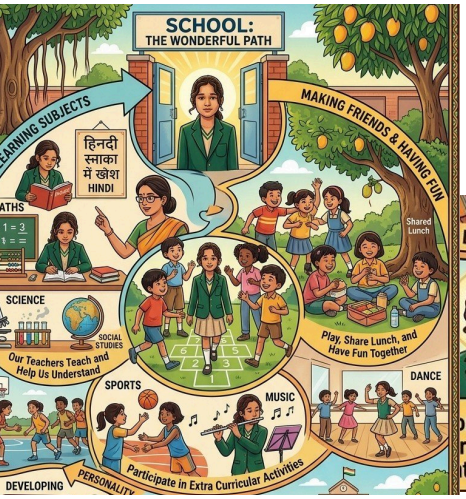

It helps us to learn new things, make new friends and develop our personality. It also helps us to become good citizens and contribute to our country's development. School life is a wonderful time. We should enjoy our school life and develop ourselves to become good citizens.

ANSH KUMAR SHARMA
CLASS : 7 "B"

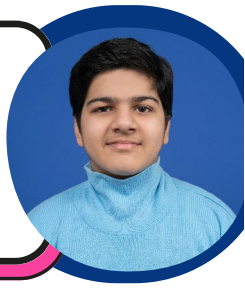

TEACHER

A teacher is,
Life changing inspiration,
direction to achieve the goal,
Sometimes, in dire situations
the support of Love,
Sometimes sweet words of appreciation
Sometimes a pat on the back.

A teacher is,
Idol of good tries,
Inspiration that gives courage
in time of crisis,
A craftsman who builds student of character,
The magic wand that makes a Student's
dreams come true.

HARSH SHARMA
CLASS : 9"A"

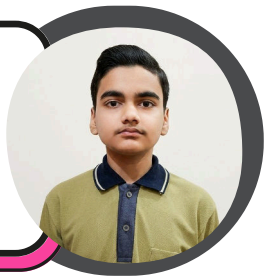

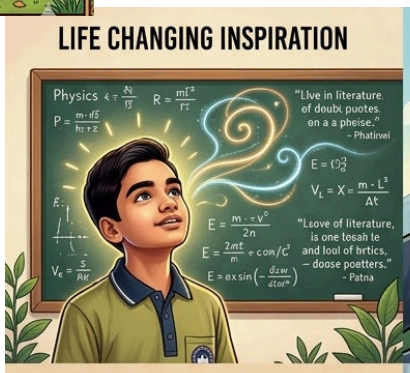

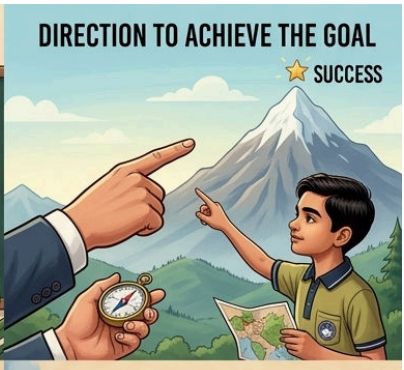

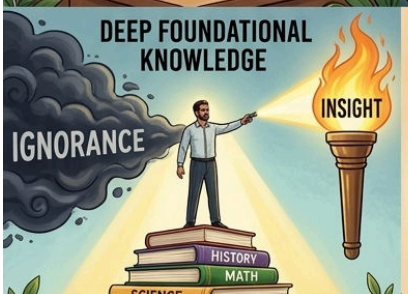

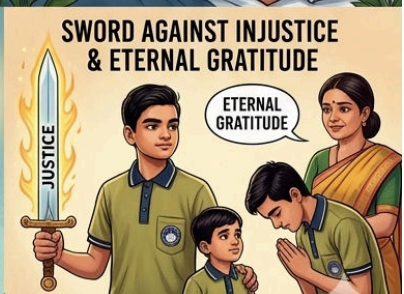

The Heart of New Era

In the heart of the city, where dreams take flight, New Era shines so bright. With the principal leading the way, Her wisdom guides us each new day. We have a vice-principal, with a caring hand, supports us all to understand. Together with teachers, a dedicated crew, They help us grow, they help us bloom too. With hearts full of hope and minds that soar, New Era is so much more. A place of learning, where futures are made, Thanks to the team, who never fade.

Starting a teaching career or joining a new school as an experienced educator is always a mix of excitement and nervousness. When I stepped into NEPS commonly called "New Era Public School", I knew I was about to embark on a new journey that would shape my professional and personal growth. My experience at this institution has been a blend of learning, challenges, and immense satisfaction.

From my very first day, I was welcomed warmly by the school management, colleagues, and students. The administration provided a structured orientation, helping me to understand the school's values, rules, and teaching methodologies. One of the first things I realized was that NEPS emphasized a modern, student-centered approach to education. Unlike traditional rote learning methods, the school encouraged interactive teaching, experiential learning, and technology integration in classrooms.

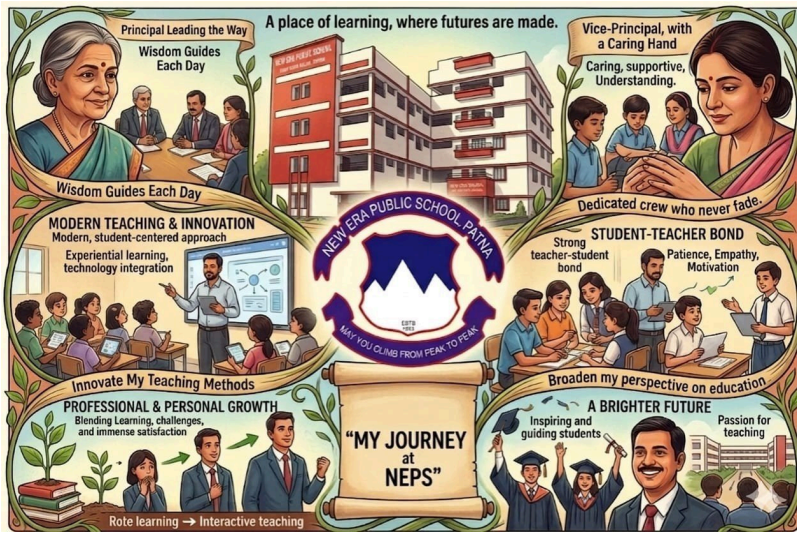

As a teacher, this pushed me to innovate my teaching methods, making lessons more engaging and effective. One of the most rewarding aspects of my experience was building a strong teacher-student bond. The students were curious, eager to learn, and full of energy. I discovered that patience, empathy, and motivation were key to understanding and guiding them effectively. By using creative teaching methods, real-life examples, and open discussions, I was able to make lessons more engaging. Over time, I saw my students improve academically and gain confidence, which gave me immense satisfaction. My journey has been an enriching experience, shaping me into a better educator and mentor. The school's progressive teaching methods, student-focused learning, and supportive community have broadened my perspective on education. This experience has reinforced my passion for teaching and my belief that education is not just about imparting knowledge but also about inspiring and guiding students toward a brighter future. I look forward to continuing my journey at NEPS (New Era Public School), learning and growing every day.

DEEPAK MISHRA
PGT(ENGLISH)

Art Gallery

Akanksha kumari [Class-8A]

Divyanshu kr. Bharti [class-10]

Akashi kumari [class-9]

Priyanshi Anand [Class-9A]

Gyanvi kumari [Class-6A]

Priyanshi Anand [Class-9A]

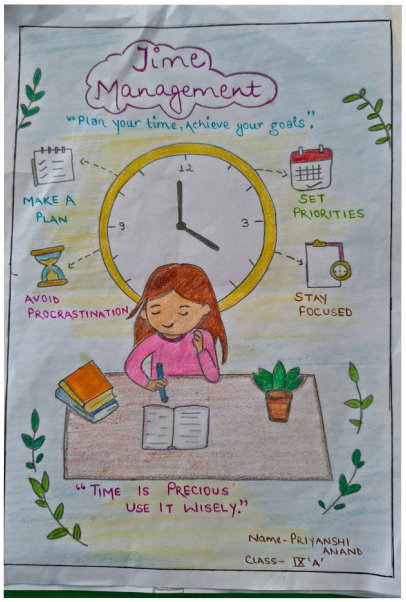

मीडिया के नज़र में

न्यू एरा पब्लिक स्कूल

न्यू एरा पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों ने अग्नि शमन से संबद्ध जागरूकता के लिए प्रभात फेरी निकाली

पटना (चौथी वाणी) पटना। आपातकाल के दौरान आमजन को

अग्नि से सुरक्षा प्रदान करने तथा अग्नि शमन सेवा से संबद्ध जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से बिहार अग्नि शमन सेवा, फाय़र स्टेशन, कंकड़बाग की अगुआई में न्यू एरा पब्लिक स्कूल, पटना के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के द्वारा आज प्रभात फेऱी निकाली गई। यह प्रभात फेऱी विद्यालय परिसर से फाय़र स्टेशन, कंकड़बाग तक की गई। प्रभात फेऱी के पूर्व कंकड़बाग के पुलिस आरक्षी अधीक्षक इंद्रजीत कुमार ने द्वितीय विश्व युद्ध एवं 1944 के दशक के अग्नि पीड़ितों का हवाला देते हुए छात्रों को बताया कि कैसे आग लगने की स्थिति में त्वरित कार्रवाई, प्राथमिक सुरक्षा उपायों तथा अग्नि शमन यंत्रों का सही उपयोग किया जा सकता है,अन्यथा एक बहुत बड़ी हादसा हो सकती है।

मौके पर डेमो देकर भी यह बताया गया कि कैसे आग लगने पर उसे नियंत्रित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, 'संरक्षित जीवन', 'सावधानी ही सुरक्षा' आदि से संबंधित कई महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। इस दौरान प्रतिभागियों ने अग्नि सुरक्षा नियमों का पालन करने तथा दूसरों को भी इसके प्रति जागरूक करने की शपथ ली तथा देशभक्ति गीत गाए गए।

इस अवसर पर विद्यालय के मौसम श्री, ओम नमः शिवाय सिंह, प्रिया सिंह, सुमित कुमार, गृजेश शर्मा, अंशुमन गुप्ता, विवेक कुमार झा तथा दर्जनों पुलिसकर्मी उपस्थित थे।

न्यू एरा पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों ने अग्नि शमन से संबद्ध जागरूकता को लेकर निकाली प्रभात फेरी

■ द्वितीय विश्व युद्ध एवं 1944 के दशक के अग्नि पीड़ितों का हवाला देते हुए छात्रों को बताया कि कैसे आग लगने की स्थिति में त्वरित कार्रवाई

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। आपातकाल के दौरान आमजन को अग्नि से सुरक्षा प्रदान करने तथा अग्नि शमन सेवा से संबद्ध जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से बिहार अग्नि शमन सेवा, फाय़र स्टेशन, कंकड़बाग की अगुआई में न्यू एरा पब्लिक स्कूल, पटना के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के द्वारा आज प्रभात फेऱी निकाली गई। यह प्रभात फेऱी विद्यालय परिसर से फाय़र स्टेशन, कंकड़बाग तक की गई। प्रभात फेऱी के पूर्व कंकड़बाग ... कुमार ने द्वितीय विश्व युद्ध एवं 1944 के दशक के अग्नि पीड़ितों का हवाला देते हुए छात्रों को बताया कि कैसे आग लगने की स्थिति में त्वरित कार्रवाई, प्राथमिक सुरक्षा उपायों तथा अग्नि शमन यंत्रों का सही उपयोग किया जा सकता है,अन्यथा एक बहुत बड़ी हादसा हो सकती है। मौके पर डेमो देकर भी यह बताया गया कि कैसे आग लगने पर उसे नियंत्रित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, 'संरक्षित ... संबंधित कई महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। इस दौरान प्रतिभागियों ने अग्नि सुरक्षा नियमों का पालन करने तथा दूसरों को भी इसके प्रति जागरूक करने की शपथ ली तथा देशभक्ति गीत गाए गए।

इस अवसर पर विद्यालय के मौसम श्री, ओम नमः शिवाय सिंह, प्रिया सिंह, सुमित कुमार, गृजेश शर्मा, अंशुमन गुप्ता, विवेक कुमार झा तथा दर्जनों पुलिसकर्मी उपस्थित थे। धन्यवाद।

पटना। सीबीएसई दसवीं बोर्ड परीक्षा में जिले के स्कूलों के विद्यार्थियों ने शानदार प्रदर्शन कर सफलता का परचम लहराया है। छात्र-छात्राओं ने उत्कृष्ट अंक प्राप्त कर न केवल अपने विद्यालय, बल्कि जिले का भी नाम रोशन किया है। उनकी इस उपलब्धि से शिक्षकों, अभिभावकों व पूरे विद्यालय परिवार में खुशी का माहौल है।

न्यू एरा के विद्यार्थियों का रहा उत्कृष्ट प्रदर्शन: सीबीएसई की दसवीं बोर्ड परीक्षा में न्यू एरा पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों का उत्कृष्ट प्रदर्शन रहा। छात्र अमन राज 98% अंकों के साथ स्कूल टॉपर बने। 94.3% के साथ वैभव विमल ने दूसरा और 93% अंक के साथ लक्ष्मी राजेश्वर सिंह 93% अंक लाकर तीसरा स्थान स्कूल में हासिल किया। निदेशक डॉ. अरविंद कुमार और प्राचार्या डॉ. नीना

न्यू एरा के छात्रों का जलवा

PATNA : केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) की 2025-26 की 10वीं मुख्य परीक्षा में न्यू एरा पब्लिक स्कूल के छात्रों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए विद्यालय का नाम रोशन किया है. छात्र अमन राज ने 98% अंक हासिल कर शीर्ष स्थान प्राप्त किया, जबकि वैभव विमल ने 94.3%, लक्ष्मी राजेश्वर सिंह ने 93%, शाश्वत आनंद ने 92.8% अंक प्राप्त किए. वहीं उत्तम विद्यार्थी, अब्दुल कबीर और सिमरन कुमारी ने 92.6% तथा अर्णव वर्णवाल और अर्णव गौतम ने 91.4% अंक लाकर बेहतरीन सफलता दर्ज की.

पटना न्यू एरा पब्लिक स्कूल में ग्रेजुएशन शिरोमणि समारोह का हुआ भव्य आयोजन

पटना। पटना न्यू एरा पब्लिक स्कूल के यूकेजी के एवं वर्ग-1 के नन्हें-मुन्हें विद्यार्थी जो अपनी शैक्षणिक यात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव को पार किया है; के लिए आज एक भव्य 'ग्रेजुएशन शिरोमणि समारोह' का आयोजन किया गया। शिक्षिका मिक्की कुमारी के संचालन में कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं विद्यालय संगीत मैत्री मंडली के स्वागत गीत से किया गया। इस अवसर पर उपस्थित विद्यालय के निदेशक डॉ. (श्रीमती) नीना कुमार ने उपस्थित शिक्षकों एवं अभिभावकों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि- बच्चों के लिए यह एक सुनहला पल है, क्योंकि ये अपने जीवन की एक नई शुरूआत कर रहे हैं। उन्होंने बच्चों को अनुशासन, अथक

परिश्रम, तथा नैतिक मूल्यों के साथ अपने इच्छित मार्ग पर निरंतर आगे बढ़ने का संदेश दिया तथा मोबाईल स्क्रीन पर कम-से-कम समय देने को कहा। सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान यूकेजी के बच्चों के द्वारा ग्रुप डांस तथा वर्ग-1 के बच्चों के द्वारा थैंकिंग डांस तथा रैंप वॉक किया गया। अंत में सभी बच्चों को उपाधि, प्रमाण-पत्र एवं स्मृति-चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। मौके पर इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ कार्डियोलॉजी, पटना के पूर्व निदेशक डॉ. अरविंद कुमार, प्रधानाचार्या अनुपमानाथ, सुष्मिता भट्टाचार्या, मौसम अख्तारी बानो, संध्या मिश्रा, सुनंदा दत्ता, काजल मंडल, शशांक मिश्रा आदि उपस्थित थे। उपरोक्त समस्त आशय की जानकारी ओम नमः शिवाय सिंह ने दी।

हर खबर पर पैनी नजर
नई सोच एक्सप्रेस
(बिहार और झारखंड से प्रकाशित हिन्दी दैनिक)

संक्षिप्त समाचार

सीबीएसई 10वीं की परीक्षा में न्यू एरा पब्लिक स्कूल का शानदार प्रदर्शन

पटना। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड 2025-26 की 10वीं मुख्य परीक्षा में न्यू एरा पब्लिक स्कूल के छात्र अमन राज ने 98% ,वैभव विमल ने 94.3% , लक्ष्मी राजेश्वर सिंह ने 93% , शाश्वत आनंद ने 92.8%, उत्तम विद्यार्थी, अब्दुल कबीर एवं सिमरन कुमारी ने 92.6% तथा अर्णव वर्णवाल व अर्णव गौतम ने 91.4% अंक प्राप्त कर स्कूल का नाम रौशन किया है। इनके इस शानदार सफलता पर विद्यालय के निदेशक डॉ. अरविंद कुमार, प्राचार्या डॉ. (श्रीमती) नीना कुमार,उप-प्राचार्य मौसम श्री एवं डॉ. प्रिया मुकेश सिन्हा, शिक्षाविद् सुष्मिता भट्टाचार्या,ओम नमः शिवाय सिंह, अंकित अग्रवाल, अंशुमन गुप्ता,विवेक कुमार झा, प्रणव पांडेय ,अनुपमानाथ, संतोष कुमार, संगीता स्वरूप, अरुण कुमार, द्वारिका यादव,सोमनाथ राय,सुप्रिया सिन्हा आदि ने हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रदान कर उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। धन्यवाद्!

न्यू एरा पब्लिक स्कूल, बाधाकोल में 'ओरिएंटेशन प्रोग्राम' का भव्य आयोजन; नन्हे कलाकारों ने मोह लिया सबका मन ||

दैनिक सवेरा संवाददाता | विक्रम — विक्कू सिंह

बिक्रम (पटना): पटना जिले के बिक्रम प्रखंड अंतर्गत बाधाकोल स्थित न्यू एरा पब्लिक स्कूल में 'ओरिएंटेशन प्रोग्राम' (परिचय कार्यक्रम) का आयोजन बड़े ही हर्षोल्लास और जोश के साथ किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य अभिभावकों को विद्यालय की कार्यप्रणाली, शैक्षणिक पद्धतियों और संस्थान के दृष्टिकोण से अवगत कराना था, ताकि घर और स्कूल के बीच एक मजबूत सेतु का निर्माण हो सके। भव्य शुभारंभ: कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन और कक्षा 9 के विद्यार्थियों की मधुर गणेश वंदना व प्रार्थना गीत के साथ हुई, जिसने पूरे माहौल को आध्यात्मिक बना दिया। सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ: प्री-प्राइमरी से लेकर कक्षा 5 तक के छोटे बच्चों ने अपनी मनमोहक सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उनकी ऊर्जा और प्रतिभा की उपस्थित लोगों ने जमकर सराहना की। सम्मान समारोह: 'शैक्षणिक उपलब्धि पुरस्कार वितरण' के दौरान मेधावी छात्र-छात्राओं को उनकी कड़ी मेहनत और उत्कृष्टता के लिए सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में कई गणमान्य व्यक्तियों ने शिरकत की, जिनमें मुख्य अतिथि श्री अमन प्रीत सिंह (जिला परिवहन अधिकारी, अरवल) प्रमुख थे। उनके साथ मंच पर विशिष्ट अतिथि के रूप में निम्नलिखित हस्तियाँ उपस्थित रहीं: श्री चंदन कुमार (अनुमंडल पदाधिकारी, पालीगंज) श्री जनक कुमार (उप समाहर्ता, भूमि सुधार, पालीगंज) श्री गोपाल विद्यार्थी (वरिष्ठ पत्रकार एवं शिक्षाविद्, बिक्रम) अतिथियों ने अपने संबोधन में विद्यार्थियों को अनुशासन, परिश्रम और सकारात्मक सोच का मंत्र दिया। उन्होंने बच्चों से समाज का जिम्मेदार नागरिक बनने और अपने लक्ष्यों के प्रति समर्पित रहने का आग्रह किया। "प्रत्येक बच्चे का सर्वांगीण विकास हमारी प्राथमिकता है। शिक्षा केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण का आधार होनी चाहिए।" — डॉ. नीना कुमार, प्रधानाचार्या विद्यालय की उप-प्राचार्या डॉ. प्रिया ने 'हमें क्या चीज़ अद्वितीय बनाती है' विषय पर एक विशेष प्रस्तुति दी, जिसमें उन्होंने स्कूल की विशिष्ट विशेषताओं और आधुनिक शैक्षणिक दृष्टिकोण को अभिभावकों के सामने रखा। कार्यक्रम का समापन अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट कर और उप-प्रधानाचार्य द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया गया। अंत में राष्ट्रगान के साथ पूरा परिसर देशभक्ति के वातावरण में सराबोर हो गया। विद्यालय की प्रधानाचार्या डॉ. नीना कुमार ने कार्यक्रम की सफलता के लिए शिक्षकों और विद्यार्थियों को बधाई दी।

पटना न्यू एरा पब्लिक स्कूल में ग्रेजुएशन शिरामणि समारोह

पटना (आससे)। पटना न्यू एरा पब्लिक स्कूल के यूकेजी एवं वर्ग एक के नन्हे-मुन्हे विद्यार्थी जिन्होंने अपनी शैक्षणिक यात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव को पार किया है, के लिए भव्य 'ग्रेजुएशन शिरामणि समारोह' का आयोजन किया गया। शिक्षिका मिक्की कुमारी के संचालन में कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन एवं विद्यालय संगीत मैत्री मंडली के स्वागत गीत से किया गया। इस अवसर पर विद्यालय की निदेशक डा. (श्रीमती) नीना कुमार ने कहा कि बच्चों के लिए यह एक सुनहला पल है, क्योंकि ये अपने जीवन की एक नयी शुरुआत कर रहे हैं। उन्होंने बच्चों को अनुशासन, अथक परिश्रम तथा नैतिक मूल्यों के साथ अपने इच्छित मार्ग पर निरंतर आगे बढ़ने का संदेश दिया तथा मोबाइल स्क्रीन पर कम से कम समय देने को कहा।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान यूकेजी के बच्चों के द्वारा ग्रुप डांस तथा वर्ग एक के बच्चों के द्वारा थैंकिंग डांस तथा रैंप वॉक किया गया। अंत में सभी बच्चों को उपाधि, प्रमाण-पत्र एवं स्मृति-चिह्न देकर सम्मानित किया गया। मौके पर इंदिरा गांधी इंस्टीच्यूट ऑफ कार्डियोलॉजी, पटना के पूर्व निदेशक डा. अरविंद कुमार, प्रधानाचार्या अनुपमनाथा, सुष्मिता भट्टाचार्या, मौसमश्री, अख्तारी बानो, संध्या मिश्रा, सुनंदा दत्ता, काजल मंडल, शशांक मिश्रा आदि उपस्थित थे।

मीडिया के नज़र में
न्यू एरा पब्लिक स्कूल

न्यु एरा पब्लिक स्कूल में ग्रीन ओरिएंटेशन प्रोग्राम, छात्रों को पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता व प्रकृति के प्रती किया जागरूक

गोपाल विद्यार्थी

पटना : प्रखंड क्षेत्र के बाघाकोल स्थित न्यू एरा पब्लिक स्कूल में विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता और प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी की भावना को विकसित करने के उद्देश्य से ग्रीन ओरिएंटेशन प्रोग्राम आयोजित की गई।मौके पर आयोजित कार्यक्रम की शुरूआत विद्यालय की प्राचार्या डॉ. नीना कुमार ने दीप प्रज्वलित कर किया। वहीं तरुमित्रा संस्था की सदस्य एवं प्रकृति संरक्षणवादी देवप्रिया व विद्यालय की उप- प्राचार्या डॉ. प्रिया ने विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित किया।

इस दौरान पर्यावरण के प्रती विद्यार्थियों के समझ को विकसित करने के लिए कई रोचक एवं ज्ञानवर्धक गतिविधियां आयोजित की गई। विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए प्राकृतिक संसाधनों के महत्व, पेड़-पौधों की उपयोगिता तथा स्वच्छ और हरित वातावरण बनाए रखने की आवश्यकता के बारे में सीखा।कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण प्राकृतिक गतिविधियाँ रहीं, जिनके माध्यम से विद्यार्थियों ने प्रकृति के साथ जुड़कर सीखने का अनुभव प्राप्त किया। पौधारोपण, पर्यावरण जागरूकता अभियान तथा स्वच्छता अभियान जैसी गतिविधियों में विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। संचालन सुशांत कुमार ने किया । प्राचार्या डॉ नीना ने बताया कि कार्यक्रम के माध्यम से बच्चों, शिक्षको व क्षेत्रीय लोगों को यह संदेश दिया गया कि पर्यावरण की सुरक्षा और हरियाली बनाए रखने के लिए हम सभी का सामूहिक प्रयास अत्यंत आवश्यक है।

न्यू एरा पब्लिक स्कूल में ग्रीन ओरिएंटेशन प्रोग्राम ने छात्रों को पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता व प्रकृति के प्रती किया जागरूक

प्रात : किरण संवाददाता

पटना । प्रखंड क्षेत्र के बाघाकोल स्थित न्यू एरा पब्लिक स्कूल में विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता और प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी की भावना को विकसित करने के उद्देश्य से ग्रीन ओरिएंटेशन प्रोग्राम आयोजित की गई।मौके पर आयोजित कार्यक्रम की शुरूआत विद्यालय की प्राचार्या डॉ. नीना कुमार ने दीप प्रज्वलित कर किया। वहीं तरुमित्रा संस्था की सदस्य एवं प्रकृति संरक्षणवादी देवप्रिया व विद्यालय की उप- प्राचार्या डॉ. प्रिया ने विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित किया।इस दौरान पर्यावरण के प्रती विद्यार्थियों के समझ को विकसित करने के लिए कई रोचक एवं ज्ञानवर्धक गतिविधियां आयोजित की गई।

विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए प्राकृतिक संसाधनों के महत्व, पेड़-पौधों की उपयोगिता तथा स्वच्छ और हरित वातावरण बनाए रखने की आवश्यकता के बारे में सीखा।कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण प्राकृतिक गतिविधियाँ रहीं।

न्यू एरा पब्लिक स्कूल में ग्रेजुएशन-डे मना

पटना। न्यू एरा पब्लिक स्कूल के यूकेजी और वर्ग-1 के विद्यार्थियों के लिए शनिवार को 'ग्रेजुएशन शिरोमणि समारोह' का आयोजन हुआ। शिक्षिका मिक्की कुमारी के संचालन में शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं विद्यालय संगीत मैत्री मंडली के स्वागत गीत से किया गया। निदेशक डॉ. नीना कुमार ने कहा कि बच्चों के लिए यह एक सुनहरा पल है, क्योंकि ये अपने जीवन की एक नई शुरुआत कर रहे हैं। उन्होंने बच्चों को अनुशासन, परिश्रम व नैतिक मूल्यों के साथ आगे बढ़ने का संदेश दिया।